परिशिष्ट-३

वैदिक-सन्धि-प्रक्रिया

वैदिक भाषा में सन्धि के नियम प्रायः लौकिक भाषा के सन्धि-नियमों के समान ही हैं। परन्तु इन सन्धियों के नाम लौकिक भाषा की सन्धियों से भिन्न हैं।

स्वर-सन्धि

१. प्रश्लिष्ट सन्धि

लौकिक संस्कृत की दीर्घ-गुण एवं वृद्धि सन्धि को वैदिक प्रश्लिष्ट सन्धि के नाम से अभिहित किया जाता है इसे निम्नवत् देखा जा सकता है—

(१) दो समानाक्षरों (Monophthongs) की सन्धि होने पर वह समानाक्षर दीर्घ हो जाता है—समानाक्षरे संस्थाने दीर्घमेकमुभेस्वरम्, अर्थात् ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ आवे तो क्रमशः आ, ई, ऊ, ॠ होता है, यथा अश्वाजनि, मधूदकम् लौकिक संस्कृत में 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से इस नियम का निर्देश किया गया है।

(२) अ या आ के बाद जब इ या ई आवे तो दोनों मिलकर ए होते हैं—इकारोदय एकारमकारः। सोदयः जैसे आ + इन्द्रम् = एन्द्रं।

(३) अ, आ के बाद उ, ऊ आवे तो 'ओ' होता है—उकारोदय ओकारम्, जैसे—एतायामोप (एतायाम + उप)। ऊपर की (२) और (३) सन्धियाँ लौकिक संस्कृत की 'आदगुणः' सूत्र से होने वाली गुणसन्धि ही हैं।

(४) अ, आ के बाद जब सन्ध्यक्षर में पहला और तीसरा अर्थात् ए या ऐ आवे तो दोनों मिलकर ऐ होते हैं—परस्वैकारमोजयोः, जैसे आ + एनम् = ऐनम्।

(५) अ, आ के बाद जब युग्म सन्ध्यक्षर अर्थात् ओ या औ आवें तो 'औ' होता है—औकारं युग्मयोः एते प्रश्लिष्टानाम सन्धयः, उदाहरण—यत्र + ओषधीः = यत्रौषधीः। ऊपर की (४) और (५) सन्धियाँ 'वृद्धिरेचि' सूत्र से होने वाली वृद्धि सन्धि के समान ही हैं।

२. क्षैप्र सन्धि

लौकिक संस्कृत में इकोयणचि-सूत्र से प्रोक्त यण् सन्धि ही वैदिक क्षैप्र सन्धि है। अकंठ्य समानाक्षर अर्थात् ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ लृ बाद जब असमान स्वर आवे तो ये अपने-अपने अन्तस्थ अर्थात् य् व् र् ल् हो जाते हैं—समानाक्षरमन्तस्थां स्वामकण्ठ्यं स्वरोदयम्। जैसे—अभ्यार्षेयम् = अभि + आर्षेयम्, अधीन्नवत्र = अधीन्नु + अत्र।

Scanned with CamScanner

३. अभिनिहित सन्धि

लौकिक पूर्वरूप सन्धि को यहाँ अभिनिहित के रूप में निम्नवत् देखा जा सकता है—

(१) जब ए, ओ किसी पाद के अन्त में हों और उसके बाद पाद के आरम्भ में अ आवे तो वह ए या ओ के साथ एक रूप हो जाता है और उसके स्थान पर अवग्रह होता है। अथाभिनिहतः सन्धिरेतेः प्राकृतवैकृतैः। एकीभवति पादादिरकारस्तेऽत्रसन्धिजा। जैसे 'त्वेभ्योऽग्ने' 'दाशुषेऽग्ने'।

(२) पाद के अन्तर्गत भी 'अ' के बाद य या व आवे—अन्तः पादमकारच्चेत्संहितायां लघोर्लघु। यकाराद्यक्षरं परं वकाराद्यपि वा भवेत्, जैसे सोऽयमागात्, तं पृच्छन्तोऽवरासः मे।

(३) 'आवो', अये, अयो, अवे के बाद अ आवे और उसके बाद य, व के अतिरिक्त भी कोई व्यंञ्जन आवे तो अ को पररूप होता है, अन्यद्यापि तथा युक्तमावोऽन्तोपहितात्सतः। अयेऽयोऽवेऽव इत्यन्तैरकारः सर्वथा भवन्। जैसे—गावोऽभितः। अजीतयेऽहतये। सूनवेऽग्ने।

(४) जब अ के पहले 'वो' ये और उस वो के पहले आ, न, प्र, क्व, चित्र, सविता, एव, क शब्द आवें तो 'अ' का पूर्वरूप होता है—व इत्येतेन चा न प्र का चित्रः सवितैव कः। पदैरुपहितेनैतेः। जैसे—आवोऽहं। क्व वोऽश्वाः। प्रवोऽच्छा। चित्रोवोऽस्तु।

४. भुग्न सन्धि

ओ, औ के बाद जब अनोष्ठ्य स्वर अ, आ आवे तो ओ, औ का अ, आ हो जाता है और इस अ, आ तथा अनोष्ठ्य स्वर के बीच 'व्' रख दिया जाता है—ओष्ठ्ययोन्योर्भुग्नमनोष्ठ्ये वकारोऽत्रान्तरागम। जैसे—वायो + आ = वाय् + ओ + आ = वाय् + अ + आ = वाय् + अ + व + आ = वायवा। वायवा याहि दर्शत।

५. उद्ग्राहवत् सन्धि

अ आ के बाद जब ऋ आवे तो अ, आ की जगह पर अ होता है—ऋकार उदये कण्ठ्यावकारं तदुद्ग्राहवत्। जैसे—मधुना + ऋतस्य = मधुन ऋतस्य।

६. उद्ग्राह सन्धि

ए और ओ के बाद जब कोई स्वर आवे तो ए और ओ के स्थान पर 'अ' होता है—ह्रस्वपूर्वस्तु सोकारं पूर्वौ चोपोत्तमात्स्वरौ त उद्ग्राहा। जैसे—अग्ने + इन्द्र = अग्न इन्द्र। वायो + उक्थेभिः = वाय उक्थेभिः।

७. उद्ग्राहपदवृत्ति सन्धि

जब उद्ग्राह सन्धि की दशा में ए, ओ के बाद कोई दीर्घ स्वर आवे तो उद्ग्राह पदवृत्ति सन्धि होती है—दीर्घपरा उद्ग्राहपदवृत्तयः। जैसे—के + ईषते = कईषते।

८. प्रगृहीतपदसन्धि

प्रकृतिभाव—सन्धि की दशा में भी सन्धि न होने को प्रकृतिभाव कहते हैं। प्रकृतिभाव का अर्थ है जैसा है वैसा ही रहना। लौकिक संस्कृत में प्लुतप्रगृह्योऽचि नित्यं इत्यादि सूत्रों से इसी का निदर्शन किया गया है। इसे अग्रवत् देखा जा सकता है—

Scanned with CamScanner

(१) प्रगृह्य[1] स्वरों के बाद जब ति होता है तो वह ज्यों का त्यों रहता है।

अर्थात् प्रगृह्य स्वरों को प्रकृतिभाव होता है। जैसे—ऊँ इति। प्रो इति। इन्द्रवायू इमे सुता। किन्तु व्यक्षरान्त शब्दों के अन्त में आने वाले प्रगृह्य स्वरों के बाद जब 'इव' हो तो प्रकृतिभाव नहीं होता। जैसे दम्पती + इव = दम्पतीव। सन्धि से उत्पन्न, उ के पहले यदि 'य' हो और वह 'उ' प्रगृह्य हो तो प्रकृतिभाव होता है (प्रत्यु अदर्शि में प्रति + उ = प्रत्यु हुआ है। प्रगृह्य संज्ञा होने से प्रकृतिभाव हुआ है)।

(२) सु के बाद जब ऊ से प्रारम्भ होने वाला शब्द आवे तो प्रकृतिभाव होता है—ताभिरूपु ऊतिभिः।

(३) श्रद्धा, सम्राज्ञी, सुशमी, स्वधोती, पृथुज्रयी, पृथिवी, ईषा, मनीषा, यया निद्रा, ज्या, प्रपा, के बाद अ, इ, ई आने पर प्रकृतिभाव होता है।

(४) सचा के बाद स्वर से प्रारम्भ होने वाले पाद के आने पर प्रकृतिभाव होता है; जैसे—मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रः।

(५) एकाक्षर पद 'आ' के बाद पाद को प्रारम्भ करने वाला स्वर और उस 'आ' के पहले 'सु' जोषम्, चर्षणी, चर्षणिभ्यः ए, अस्मत्, आवे तो आ का प्रकृतिभाव होता है। इन सन्धियों—(४) और (५) में प्रकृतिभाव होने पर आ पर अनुस्वार हो जाता है—तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वाँ उशन्तम्।

९. द्विसन्धि

प्रगृह्य संज्ञा होने पर जब किसी स्वर के दोनों ओर स्वर होते हैं तो उसे 'द्विसन्धि' कहते हैं, जैसे अभूदु भा उ अंशवे में प्रगृह्य उ के दोनों ओर क्रमशः आ और अ हैं।

व्यञ्जन-सन्धि

१. अन्वक्षर सन्धि

(१) जब स्वर के बाद व्यञ्जन आता है तो इनकी सन्धि को अनुलोम अन्वक्षर सन्धि कहते हैं, जैसे—ननि मिषति (२) इसके विपरीत व्यञ्जन पहले हो और स्वर बाद में तो इनकी सन्धि को प्रतिलोम अन्वक्षर सन्धि कहते हैं। इस सन्धि में वर्गों के पहले वर्ण को अपने वर्ग के तीसरे वर्ण में परिवर्तित किया जाता है—तत्र प्रथमास्तृतीयभावं प्रतिलोमेषु नियन्ति। जैसे—तमिन्द्रं दानमीमहे = दानम् + ईमहे में व्यञ्जन पहले, स्वर बाद में होने से प्रतिलोम अन्वक्षर सन्धि होगी। 'अर्वागा वर्तया हरी में अर्वाक् के क् को तीसरा वर्ण 'ग्' हुआ है।

२. अवशंगम आस्थापित सन्धि

(१) जब स्पर्श वर्ण क से म तक पहले आवें और उसके बाद कोई व्यञ्जन हो तो यह सन्धि अवशंगम आस्थापित कहलाती है इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है—स्पर्शाः पूर्व व्यञ्जनानामुत्तराण्यास्थापितानामवशंगमं तत्। जैसे—वषट् ते, यत्पत्ये।

---

१. ओकार आमन्त्रितज प्रगृह्याः पदं चान्योऽपूर्वपदान्तगश्च।
षष्ठादयश्च द्विवचोन्त भाजस्त्रयोदीर्घा सापमिकौ च पूर्वौ॥
अस्मे युष्मे त्वे अमी च प्रगृह्या उपोत्तमं नानुदात्तं न पद्यम्।
ठकारश्चेति करणे न युक्तो रक्तो प्रक्ता द्राधित शाकलेन॥

Scanned with CamScanner

३. वशंगम आस्थापित सन्धि

(१) जब वर्ग के पहले व्यञ्जनों के बाद घोष व्यञ्जन (प्रत्येक वर्ग का तीसरा चौथा, पाँचवाँ वर्ण और ह य व र ल) आवें तो पहले व्यञ्जनों को उसी वर्ग का तीसरा कर देते हैं—घोषव्रत्परा प्रथमास्तृतीयान्स्वान्। जैसे—यद्वाग्वदति। षड्भिः।

(२) वर्ग के प्रथम व्यञ्जनों (क, च, ट, त, प) के उसी वर्ग का पाँचवाँ व्यञ्जन (क्रमशः ङ, ञ, ण, न, म) कर देते हैं जब उनके बाद किसी वर्ग का पाँचवाँ व्यञ्जन आवे—उत्तमा नुत्तमेषूदयेषु। जैसे—अर्वाक् + नरा = अर्वाङ्नरा तत् + नः = तन्नः।

(३) जब वर्ग के प्रथम व्यञ्जनों (क, च, ट, त, प) के बाद श आवे तो वह छ हो जाता है। सर्वैः प्रथमैरुपधीयमानः, शकार शाकल्यपितुश्छकारम्। जैसे—विपाट् + शुतुद्री = विपाट् छुतुद्री।

(४) यदि वर्गों के प्रथम व्यञ्जनों के बाद 'ह' आवे तो वह जिस वर्ग का प्रथम व्यञ्जन पहले आया है उसी वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है। जब कि पहले आने वाले प्रथम वर्ण को तीसरा वर्ण कर दिया गया हो। पदान्तैस्तैरेव तृतीयभूतैस्तेषां चतुर्थानुदयो हकारः। जैसे—अवाट् + हव्यानिः = अवाड्ढव्यानि।

(५) 'म' के बाद यदि उससे भिन्न स्थान वाला स्पर्श व्यञ्जन आवे तो 'म' उस बाद में आने वाले स्पर्श व्यञ्जन के वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है—विस्थाने स्पर्श उदये मकारः सर्वेषामेवोदयस्योत्तमं स्वम् जैसे—अहम् + च = अहञ्च।

(६) यदि म के बाद अन्तस्थ य, व, ल आवें तो 'म' को उसी अन्तस्थ का अनुनासिक रूप कर देते हैं। अन्तस्थासु रेफवर्जं परासु, तां तां पदादिष्वनुनासिकां तु। जैसे—यम + यम् + युजं कृणुते = यँय्यँय्युजं कृणुते।

(७) न के बाद जब ल आवे तो न को लँ कर देते हैं तथा नकार उदये लकारे जैसे—जिगिवान् + लक्षमादत् = जिगिवाँल्लक्षमादत्।

(८) न के बाद जब श और चवर्ग आवे तो न को ञ होता है—ञकारं शकारचकारवर्गयोः जैसे— आस्मान् + जगभ्यात् = आस्माञ्जगभ्यात्।

(९) त के बाद जब ज या ल आवे तो त को ज या ल कर देते हैं—तकारो जकारलकारयोस्नौ। जैसे—प्रयत् + जिगासि = प्रयज्जिगासि। अङ्गात् + लोम्नः = अङ्गाल्लोम्नः।

(१०) त के बाद जब कोई अघोष तालव्य व्यञ्जन (च, छ) आवे तो त को च होता है—तालव्येऽघोष उदये चकारम् जैसे—तत् + चक्षु = तच्चक्षुः। यत् + छर्दिः = यच्छर्दिः।

(११) ञ और च के बाद जब श आवे तो श को छ कर देते हैं—छकारं तयोरुदयः शकारः जैसे—तत् + शंयोरांः = तच्छंयोरा।

४. परिपन्न सन्धि

म् के बाद जब र या ऊष्मवर्ण (श ष स ह) आवे तो म को अनुस्वार हो जाता है—रेकोष्मणोरुदययोर्मकारोऽनुस्वारं तत्परिपन्नमाहुः जैसे—होतारम् + रत्नधातमम् = होतारंरत्नधातमम्। त्वाम् + ह = तवांह। (सम्राट शब्द इसका अपवाद है क्योंकि सम् + राट् = सम्राट्; में म् से परे र रहने पर भी म् को अनुस्वार नहीं होता।

Scanned with CamScanner

५. अन्तःपात सन्धि

अन्तःपात प्रायः क, च तथा त का होता है इसे इस प्रकार देखा जा सकता है—

(१) क का अन्तःपात—यदि 'ङ्' के बाद कोई अघोष ऊष्मवर्ण आवे तो बीच में 'क' का आगम होता है जैसे—अर्वाङ् + शश्वतम् = अर्वाङ्कछश्वतम्, प्रत्यङ् + स विश्वः, = प्रत्यङ्कसविश्वः। अघोष वर्ण न होने पर 'दध्यङ् ह' ही होगा।

(२) च का अन्तः पात—ञ के बाद श आवे तो दोनों के बीच 'च' होता है जैसे—वञ्जिञ् + श्नथिहि = वञ्जिञ्च्छ्नथिहि।

(३) त का अन्तःपात—ट और न के बाद जब स आवे तो बीच में त होता है। अप्राट् + स = अप्राट्त्स। तान् + सम् = तान्त्सम्।

विसर्ग-सन्धि

१. पदवृत्ति

(१) अरिफित विसर्जनीय के पहले दीर्घ स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो तो विसर्जनीय को 'आ' हो जाता है। विसर्जनीयोऽरिफितो दीर्घपूर्वः स्वरोदयः आकारम् जैसे 'या ओषधीः'।

२. उद्ग्राह सन्धि

जब अरिफित विसर्जनीय के पहले ह्रस्व हो और बाद में स्वर आवे तो विसर्जनीय को उपधासहित 'अ' हो जाता है। ह्रस्व पूर्वस्तु सोऽकारम् जैसे—यः + इन्द्र = य इन्द्रः।

३. नियत सन्धि

(१) यदि अरिफित विसर्जनीय के बाद घोष वर्ण आवे तो उपधा के साथ विसर्जनीय को 'आ' हो जाता है। विसर्जनीयआकारमरेफी घोषवत्परः जैसे—पुनानः + यन्ति = पुनानायन्ति धीतयः।

(२) यदि रिफित विसर्जनीय के बाद 'र' आवे तो रिफित विसर्जनीय के पहले वाले ह्रस्व को दीर्घ कर देंगे और विसर्ग का लोप हो जायेगा। प्रातः + रत्नम् = प्राता रत्नम्।

४. प्रश्रित सन्धि

अरिफित विसर्जनीय के पहले यदि ह्रस्व स्वर हो और बाद में घोष व्यञ्जन आवे तो विसर्ग अपने पूर्व के ह्रस्व के साथ 'ओ' हो जाता है—ओकारं ह्रस्वपूर्वः जैसे—देवः + देवेभिः = देवो देवेभिः।

५. रेफ सन्धि

रिफित विसर्जनीय के पहले जब कोई स्वर हो और बाद को कोई स्वर या घोष व्यंजन हो तो उस विसर्जनीय को 'र' हो जाता है। सर्वोपधस्तु स्वघोषवत्परो, रेफं, रेफी ते पुना रेफसंधयः जैसे—प्रातः = अग्निम् = प्रातरग्निम्।

६. अकाम सन्धि

यदि रिफित विसर्ग के बाद 'र' आवे तो विसर्ग का लोप हो जाता है—रेफोदये लुप्यते' जैसे—अश्वाः + रथः = अश्वा रथः।

Scanned with CamScanner

७. व्यापन्न सन्धि

(१) विसर्जनीय के बाद जब अघोष स्पर्श व्यञ्जन आवे और उसके बाद कोई ऊष्म वर्ण हो तो विसर्ग उसी स्थान का ऊष्म वर्ण हो जाता है जैसे—अग्निः + च = अग्निश्च। देवाः + तम् = देवास्तम्।

(२) यदि विसर्जनीय के बाद अघोष ऊष्म वर्ण हो तो विसर्ग को वही उष्म वर्ण हो जाता है जैसे—वः + शिवतमः = वश्शिवतमः।

८. अन्वक्षर वक्त्र सन्धि

यदि विसर्ग के बाद कोई ऊष्म वर्ण आवे और उस ऊष्म वर्ण के बाद अघोष व्यञ्जन हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है; यदि वह ऊष्म वर्ण मूर्धन्य हो तो भी। समुद्रः + स्थ =समुद्रस्थः।

९. अव्यापत्ति सन्धि

अव्यापत्तिः कखपफेषु वृत्तिः, रेफं स्वर्धूः पूरघोषेष्वविग्रहे अर्थात्

(१) यदि विसर्ग के बाद क, ख, प, फ आवे तो विसर्ग ज्यों का त्यों बना रहता है जैसे—यः कृन्तत। अगत्स्यः खनमानः। यः पञ्चचर्षणीरभिः। याः फलिनीर्या अफला।

(२) स्वः धूः पूः शब्द जब समस्त-पद में हों तो विसर्ग को र हो जाता है जैसे—स्वर्यमा। धूर्षदम्। पूर्षतिम्।

१०. उपाचरित सन्धि

विसर्ग का सकार में परिवर्तन उपाचरित है। यह निम्नवत् द्रष्टव्य है—

(१) विसर्ग के पहले नामि-स्वर ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, ऐ, औ आवें तो विसर्ग को 'ष्' हो जाता है जैसे—निः + कृती = निष्कृती।

(२) जब पद के भीतर विसर्ग के बाद क और 'प' आवे तो भी उपर्युक्त परिवर्तन होता है।

(३) पाद के अन्तर्गत असमस्त पद के विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में पति शब्द आवे तो विसर्ग को 'स' हो जाता है जैसे—ब्रह्मणस्पते। वाचस्पतिः।

(४) जब विसर्ग के बाद करं, कृतं, कृधि, करत्, क, शब्द आवें तो भी विसर्ग को स् होता है जैसे—सहस्करम्, नस्कृतम्, शश्वतस्कः।

(५) असन्त शब्द के विसर्ग को स् होता है, जब उस शब्द में रकार न हो और पार, परि, कृतानि, करति शब्द बाद में आवें जैसे—तमसस्पारम्, अपस्पारे। इसके अतिरिक्त 'वास्तो' के बाद 'पति' आने पर। आविः, हविः, ज्योतिः के बाद क, पान्त और पश्यति आने पर। इलायाः, गाः, नमसः, देवयुः, द्रहुः, मातुः, इलः शब्दों के बाद 'पद' शब्द के आने पर भी, उपाचरित होता है।

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त सन्धियों के अतिरिक्त कुछ अन्य सन्धि-जन्य विकार होते हैं जिन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है—

१. नकार-विकार

यदि न के पहले 'आ' हो और बाद में स्वर हो तो शब्द के अन्त में होने पर भी इसका लोप हो जायेगा। इस प्रकार अग्रान्, जग्रसानान्, जघन्वान्, देवहूतमान्, बद्बधानान्, इन्द्रसोमान्, तृषाणान्, नो देवदेवान् आदि में नकार का लोप हो जाता है जैसे—दधन्वाँ यो। जुजुर्वां य आदि उदाहरणों में नकार का लोप हो गया है।

२. स्पर्शरिफ सन्धि

न के पहले जब ई, ऊ, हो और बाद में हतम्, योनौ, वचोभिः, यान्, युव-यून, वनिषीष्ट शब्द या कोई स्वर आवे तो न को र हो जाता है जैसे—दस्यूरेको, रश्मी, रवि आदि इसके अपवाद भी हैं।

३. स्पर्शोष्मरेफ सन्धि

'न्' के पहले जब दीर्घ स्वर हो और बाद में चरित, चक्रे, चमसान्, च, चो, चित्, चरसि, च्यौलः, चतुरः, चिकित्वान्, शब्द हों तो न् को विसर्ग के समान समझना चाहिए जैसे—महाँश्चरति।

ताँस्ते, सर्वांस्तान्, देवाँस्त्वम्, ताँस्त्रायस्व, आवदँस्त्वम् में भी न् को विसर्ग हो जाता है।

इन सन्धियों में जब 'न्' का लोप होता है, या र्, अथवा विसर्जनीय हो जाता है तो न् के पहले आने वाले स्वर पर अनुस्वार लगा देते हैं।

४. शौद्धाक्षर सन्धि

(१) पुरु, पृथु, अधि के बाद जब 'चन्द्र' शब्द आवे तो बीच में 'श्' आता है जैसे—पृथुश्चन्द्रम्, अधिश्चन्द्रम् आदि।

(२) असमस्त पद में परि के बाद 'कृ' आने पर बीच में 'ष्' होता है जैसे—परिष्कृण्वन्।

(३) समस्त पद के अन्त में 'वन्' हो और उसके बाद 'सद' शब्द आवे तो बीच में र् का आगम होता है जैसे—वनर्षदम्।

Scanned with CamScanner